अल्लाह की पहचान

13

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़ें अल्लाह तआला के लिये हैं जो सब जहानों का पालने वाला है। हम उसी की तअरीफ़ करते और उसी का शुक्र अदा करते हैं। अल्लाह के सिवाए कोई इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है। कोई उसका साझी व शरीक नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।

अल्लाह की बेशुमार रहमतें, बरकतें और सलामती नाज़िल हो मुहम्मद सल्ल. पर और उनकी आल व औलाद और असहाब पर ।

अम्मा बअद!

जब हम कहते हैं कि अल्लाह के सिवाए कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के रसूल हैं। तब हमारे लिए यह जानना और समझना ज़रूरी हो जाता है कि रसूल किसे कहते है? इबादात में क्या–क्या बातें (आमाल) शामिल हैं जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए किये जाने चाहियें और अल्लाह! है कौन? जो सब तरह की इबादतों का हक़दार है। इस पर्चे के ज़रिये हम अल्लाह की ख़ासियत व खूबियों को समझने की कोशिश करेंगे जिससे हमें उस अल्लाह की पहचान हो जाए जिसकी इबादत का हम दम भरते हैं और जो हक़ीक़त में तमाम इबादात का अकेला हक़दार है।

अल्लाह कौन है? यह जानने–पहचानने के लिए हम कुरआन को दलील बनायेंगे इसलिए कि ''कुरआन अल्लाह ने नाज़िल किया है और वही इसकी हिफ़ाज़त करने वाला है।'' (हिज्र 15,आयत–9)

और इसलिए भी कि ''अल्लाह से ज़्यादा बात का सच्चा कोई नहीं है।'' (निसा 87) इर्शादे बारी तआला है ''अल्लाह के सिवाए आसमान व ज़मीन में अगर कोई और भी मअबूद होते तो आपस में उनका टकराव हो जाता।'' (अम्बिया 21–22)

हर मअबूद अपनी मख़लूक़ को लेकर निकल जाता और वो एक–दूसरे पर चढ़ाई कर देते। जबकि अल्लाह अकेला मालिक है अर्श का और पाक है तमाम ऐबों और बकवास से।'' (इस्रा 17–42, मुअमिनून 23–91)

सच यह है कि–

अगर कोई अल्लाह की सारी बातें और खूबियां (गुण) बयान करना या लिखना चाहे तो ऐसा कर ही नहीं सकता। इसलिए कि ''अगर सारे समन्दर स्याही बन जाएं और दुनिया के सारे पेड़ कलम तो भी अल्लाह की बातें पूरी नहीं लिखी जा सकती। चाहे अलग से सात समन्दर और स्याही बना दिये जांए। (कहफ़ 18–109, लुक़मान 31–27)

इसके बावजूद मअबूदे हक़ीक़ी ''अल्लाह'' की कुछ– खूबियों और बातों को बयान करने की यह कोशिश सिर्फ़ इसलिए है ताकि आम मुसलमानों को यह इल्म हो जाए कि वो जिस अल्लाह की इबादत करते हैं वह कौन है? उसकी पहचान क्या है?

अल्लाह की पहचान

1. ''अल्लाह अकेला है। वह सब से बेनियाज़ (बे परवाह) है और सब उसके मुहताज हैं। न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है। कोई उसका हमसर (उस जैसा) भी नहीं है।'' (इख़लास 112, आयत 1 से 4)

2. ''वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है। क़ायम है, सब का थामने वाला है। वह न ऊंघता है और न उसे कभी नींद आती है। आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का है। कोई उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने सिफ़ारिश भी नहीं कर सकेगा। उसे हर चीज़ का इल्म है। उसकी कुर्सी (सिंहासन) ने सब आसमानों और ज़मीन को अपने घेरे में ले रखा है। कायनात का निज़ाम चलाने में उसे थकान भी नहीं होती।''
(बक़रा 2–255)

3. उसी ने हमें पैदा किया। वही हमारा ख़ालिक़ है। (ज़ुख़रुफ़ 43–87)

4. उसी ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया। वही सब पर ग़ालिब है और सबसे ज़्यादा इल्म वाला है। (लुक़मान 31–25, ज़ुमर 39–38)

5. वही आसमान से पानी बरसाता है। (अन्कबूत 29–63)

6. रात व दिन और सूरज व चांद उसी की निशानियों में से हैं। (फ़ुसिलत 41–37)

7. उसी ने चांद व सूरज को काम पर लगाया हुआ है। (अन्कबूत 29–61)

8. वही ज़मीन व आसमान में रोज़ी देने वाला है और वही हमारी आंखो और कानों का मालिक है। (युनुस 10–31)

9. ज़मीन और जो कुछ ज़मीन में है। सब का वही मालिक है। सातों आसमानों और बड़े अर्श का भी वही मालिक है। कोई उसके मुक़ाबले में पनाह नहीं दे सकता।
(मुअमिनून 23–85 से 89)

10. उसी ने हमें एक जान आदम (अलैहि.) से पैदा किया। उसी से उसका जोड़ा भी बना दिया। फिर उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें बना कर दुनिया में फैला दिये। (निसा 4–1, नहल 16–72)

11. उसी ने हमें एक मर्द व औरत से पैदा किया। फिर ख़ानदान व क़बीले वाला बना दिया। ताकि हम एक–दूसरे को पहचान सकें। उसके नज़दीक हममें ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो उससे ज़्यादा डरने वाला है। (हुजुरात 49–13)

12. उसी ने हमें मिट्टी से पैदा किया और ज़मीन में फैला दिया। (रूम 30–20)

13. उसी ने मिट्टी, फिर मनी से लोथड़ा, फिर गोश्त व हड्डी और फिर सूरत बनाई। (मुअमिनून 23–12 से 14, ग़ाफ़िर 40–67, क़यामा 75–37 से 39)

14. उसी ने हर जानवार को हक़ीर पानी से पैदा किया। (नूर 24–45, फ़ुर्क़ान 25–54, सज्दा 32–8, यासीन 36–77)

15. उसी ने इन्सान को सनसनाते सड़े हुए गारे से पैदा किया। (हिज्र 15–26, हज्ज 22–5, मुअमिनून 23–12 सज्दा 32–7)

16. उसी ने हमारी सूरतें बनाई। (अच्छी और जैसी चाहीं) (आले इम्रान 3–6, ग़ाफ़िर 40–64, हश्र 59–24, तग़ाबुन 64–3)

17. उसी ने जिन्नों को आग से पैदा किया। (आराफ़ 7–12, हिज्र 15–27, सुआद 38–76, रहमान 55–15)

18.उसी ने हमारें जोड़े बनाने को औरतें पैदा की। ताकि उन से चैन व राहत पा सकें। (रूम 30–21)

19.वही जिसे चाहता है बेटियां देता है और जिसे चाहता है बेटे देता है। जिसको चाहे बेटे–बेटियां मिलाकर अता करता है और जिसे चाहता है बांझ रखता है।
(शुरा 42–49–50)

20.उसी ने जिन्न व इन्सानों को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा किया। (ज़ारियात–51–56)

21.उसी ने ज़मीन की सारी चीज़ें हमारे लिए पैदा कीं। (बक़रा 2–29)

22.जब कोई पुकारने वाला उसे पुकारता है तो वह उसकी दुआ सुनता और) कुबुल करता है (बक़रा 2–186)

23.वही जिसे चाहे बादशाही दे और जिससे चाहे छीन ले। जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे। वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (आले इम्रान 3–26)

24.उसी ने औलादे आदम को इज़्ज़त बख़्शी (इस्रा 17–70)

25.उसी ने मुहम्मद सल्ल. को सारे आलम के लिए रहमत बनाकर भेजा।
(अम्बिया 21–107)

26.उसका इल्म हर चीज़ को अपने घेरे में लिये हुए है। (आराफ़ 7–89, ताहा 20–98)

27.सिर्फ़ उसी को आसमानों और ज़मीन की छिपी चीज़ों (गैब) का इल्म है।
(हूद 11–123)

28.वोह हर ऐब से पाक है। उसी ने अपने बन्दे मुहम्मद (सल्ल.) को रातों–रात अदब वाली मस्जिद (मस्जिदे हराम) से मस्जिद अक्सा तक सैर करा दी। वह सब कुछ देखने – सुनने वाला है। (इस्रा 17–01)

29.उसी ने हर चलने–फिरने वाले जानदार को पानी से पैदा किया। जिनमें से कुछ दो पांवों पर तो कुछ चार पांवों पर चलते हैं। (नूर 24–45)

30.उसके सिवाए कोई नहीं जानता कि
(क). कयामत कब वाक़ेअ होगी?
(ख). बारिश कब, कहां और कितनी होगी?
(ग). औरत के रहम में क्या और कैसा है?
(घ). कौन कब मरेगा और कहां किसे मौत आयेगी?
(च). कौन कल क्या करेगा (लुक़मान 31–34)

31.उसी ने हर जानदार का जोड़ा बनाया। (यासीन 36–36, ज़ुरियात 51–49, अनआम 6–38)

32.वह जिसे चाहता है ज़्यादा रोजी देता है और जिसके लिए चाहता है रोजी तंग कर देता है। (बक़रा 2–245, सबा 34–36,39, रूम 30–37)

33.सच्ची तौबा करने पर वह सब गुनाहों को माफ़ कर देता है। (ज़ुमर 39–53)

34.उसी ने आसमान व ज़मीन को हिक्मत से पैदा किया ताकि हर शख़्स अपने आमाल का बदला पाये। (जासिया 45–22)

35.उसी ने मौत व ज़िन्दगी को पैदा किया। ताकि हमारी आज़माईश करे कि कौन हम में अच्छे अमल करने वाला है। (हूद 11–7 कहफ़ 18–7, मुल्क 67–2, इन्सान

76–2)
36. वही जानदार से बे–जान और बे–जान से जानदार को पैदा करने वाला है। (आले इम्रान 3–27, अनआम 6–95, युनुस 10–31, रूम 30–19)
37. हमारे दिल में जो ख़्यालात आते हैं, वह उन्हें भी जानता है। (क़ॉफ़ 50–16)
38. उसी ने हमारे कान, आंख और दिल बनाये। (नहल 16–78, मुअमिनून 23–78, सज्दा 32–9, मुल्क 67–23)
39. उसी ने हमारी ज़ुबानों और रंगों को जुदा–जुदा बनाया। (रूम 30–20)
40. उसी ने आसमानों को सतूनों के बग़ैर बनाया और ज़मीन पर पहाड़ों को रख दिया। फिर ज़मीन पर कई तरह के जानवरों को फैला दिया। (लुक़मान 31–10)
41. उसी के हुक्म से ज़मीन व आसमान क़ायम हैं। (रूम 30–25)
42. उसी ने चांद को नूर और सूरज को चिराग़ बनाया। (युनुस 10–5, नूह 71–16)
43. वही रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में। चांद व सूरज को उसी ने हमारे लिए काम पर लगा रखा है। (लुक़मान 31–29)
44. उसी के हुक्म से रात और दिन बदल–बदल कर आते है (आले इमरान 3–190, जासिया 45–5)
45. उसी ने हमारे लिए चौपाए (जो चरने वाले हैं,) खाने के लिए हलाल किये। (माईदा 5–1, नहल 16–5, मुअमिनून 23–21)
46. वही हमें ख़ौफ़ व उम्मीद दिलाने के लिए बिजली चमकाता है। वही आसमान से पानी बरसाता है और मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करता है। (रूम 30–24)
47. सब को फ़ना (खत्म) होना है। सिवाए उस एक अकेले अल्लाह के। उसी की ज़ात बाक़ी रहने वाली है। (रहमान 55–26–27, क़सस–28–88)
48. वह सलामती के घर जन्नत, की तरफ़ बुलाता है, और जिसे चाहता है, सीधा रास्ता दिखाता है। (युनुस 10–25)
49. वह अगर चाहता तो सब को एक ही जमाअत कर देता। लेकिन वह जानता है कि लोग हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे। (हूद 11–118)
50. जो उसकी तरफ़ रूजू करता है। वह उसे अपनी तरफ़ का रास्ता दिखाता है। (रअद 13–27, शूरा 42–13)
51. वह कभी वादा खिलाफ़ी नहीं करता। (रूम 30–6, ज़ुमर 39–20)
52. उस से भूल–चूक भी नहीं होती। (मरयम 19–64, ताहा 20–52)
53. वह हमेशा से है और हमेशा रहने वाला है। (बक़रा 2–255, आले इम्रान 3–2)
54. वही ज़िन्दगी और मौत देने वाला है। (मुअमिनून 23–68)
55. वही नफ़े और नुक़सान का मालिक है। (फ़त्ह 48–11)
56. उसी के इख़्तियार (बस) में हिदायत देना है। (क़सस 28–56)
57. वही सहत और शिफ़ा देने वाला है। (शोअरा 26–80)
58. वही दिलों का फ़ेरने वाला है। (अनफ़ाल 8–24)
59. उसी के हाथ में दीन व दुनिया की सारी भलाईयां हैं। (आले इम्रान–3–26)
60. वह हर जगह और हर वक़्त (अपनी क़ुदरत व इल्म के ऐतेबार से) हाज़िर (मौजूद) होता है। (हदीद 57–4)
61. उसी के हुक्म से क़यामत के दिन पहाड़ उड़ते फिरेंगे। (नम्ल 27–88,

वाक़िआ 56-6, मुजम्मिल 73-14)

62. वही क़यामत के दिन जज़ा या सज़ा देगा। (तहरीम 66-10)

63. उसका दीदार करना दुनिया (जिन्दगी में) किसी के लिए मुमकिन नहीं। (अनआम 6-103, आराफ़ 7-143)

64. सिर्फ़ उसी को गैब (छिपी बातों) का इल्म है। (माईदा 5-109, 116, अनआम 6-59, आराफ़ 7-188,तौबा 9-78, युनुस10-20, हुद 11-123, नम्ल 27-65, सबा 34-3-48 और जिन्न 72-26)

65. वह अर्श पर मुस्तवी है। (हर जगह नहीं) (आराफ़ 7-54, युनुस 10-3, रअद 13-2, ताहा 20-5, फ़ुर्कान 25-59, सज्दा 32-4 और हदीद 57-4)

66. क़यामत कब वाक़ेअ होगी? यह भी सिर्फ़ वही जानता है। (आराफ़ 7-187, ताहा 20-15, लुकमान 31-34, अहज़ाब 33-63, फ़ुसिलत 41-67, जुखरूफ़ 43-85, मुल्क 67-26, जिन्न 72-25 और नाज़िआत 79-44)

67. शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) का हक़ उसके सिवाए किसी के पास नहीं। (बक़रा 2-255, रूम 30-13, सज्दा 32-4, ज़ुमर 39-44 और ज़ुखरूफ़ 43-86)

68. वह किसी शख़्स को उसकी ताक़त (बरदाश्त) से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता। (बक़रा 2-233, 286, अनआम 6-152, आराफ़ 7-42 और मुअमिनून 23-62)

69. उसके सिवाए कोई मुश्किल कुशा नहीं। (बक़रा 2-107, आले इम्रान 3-160, अनआम 6-17, आराफ़ 7-37, युनुस 10-106-107, रअद13-14-37 और जिन्न 72-20)

70. उसके सिवाए किसी को भी (फ़ौक़ अल फ़ितरत मदद के लिए पुकारना शिर्क है। (नहल 16-86, हज्ज 22-73, फ़ुर्क़ान 25-2,3, गाफ़िर 40-12,20 और फ़ुसीलत 41-47-48)

71. वह दिलों के भेद (राज़) जानने वाला है। (आले इम्रान 3-154, 167, निसा 4-63, माईदा 5-7 अनफ़ाल 8-43, हूद, 11-5, लुक़मान 31-23, शूरा 42-24, हदीद 67-6, तग़ाबुन 64-4 और मुल्क 67-13)

72. कायनात की हर चीज़ (आसमानों में हो या ज़मीन में या ज़मीन के नीचे) सब उसी की तस्बीह (पाकी) बयान करती हैं। (नहल 16-49, इस्रा 17-44, हज्ज 22-18, नूर 24-41, हश्र 59-01, सफ्फ़ 61-01, जुमुआ 62-01)

73. वह अपने इल्म के ऐतेबार से हर जगह है। (अनआम 6-80, आराफ 7-89, ताहा 20-98, गाफ़िर 40-7, फ़ुसिलत 41-54 और तलाक़ 65-12)

74. वह हर बात (चीज़) से बाखबर है। (बक़रा 2-29-231, निसा-176, माईदा 5-97 और नूर 24-35-64)

75. वह हर शै (चीज़) पर क़ादिर (कुदरत रखता) है। (बक़रा 2-20-106-148 -259-284, आले इम्रान 3-26-29-165-189, माईदा 5-19-40-120, अनआम 6-17, अनफ़ाल 8-41,तौबा 9-39, हुद 11-4,नहल-16-77 और नूर 24-45)

76. उसने कायनात छः (6) दिनों में बनाई। (आराफ़ 7-54, युनुस 10-3, हूद 11-7, फ़ुर्कान 25-69, सज्दा 32-4, क़ाँफ़ 50-38 और हदीद 57-4)

77. उसी के हुक्म से चांद व सूरज फ़िज़ा में तैर (घूम) रहें हैं। (रअद 13-2, इब्राहीम

14–33, अम्बिया 21–33, लुक़्मान 31–29, फ़ातिर 35–13, यासीन 36–40, ज़ुमर 39–5 और रहमान 55–5)

78. उसी ने ज़मीन को फर्श बनाया। (अम्बिया 21–56, नूह 71–19, नबा 78–6 और नाज़िआत 79–30)

79. उसी ने ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत बनाया। (बक़रा 2–22, गाफ़िर 40–64)

80. उसने कायनात को तदबीर से पैदा किया। (रूम 30–8, सुआद 38–27, ज़ुमर –39–5, दुख़ान 44–39, जासिया 45–22, अहक़ाफ़ 46–3 और तग़ाबुन–64 –3)

81. उसी ने हुक्म दिया कि इबादत सिर्फ़ उसी की जाएं। (इस्रा 17–23, ज़ुमर 39–2, जारियात 51–56 और बय्यिन:98–5)

82. उस की अता कर्दा (दी हुई) नैमतें लातादाद हैं। अगर हम उन्हें गिनना चाहें तो गिन ही नहीं सकते। इब्राहिम 14–34, नहल 16–18)

मुहतरम हज़रात!

एक तरफ़ तो अल्लाह की ये कुछ खुबियां हैं। दूसरी तरफ़ वो हस्तियां (जिनकी लोग अल्लाह को छोड़ कर या अल्लाह के साथ इबादत करते हैं) हैं जिन्होंने कायनात में कोई चीज़ पैदा नहीं की बल्के खुद पैदा किये गये है और वह किसी चीज़ के मालिक भी नहीं हैं।

इर्शादे बारी तआला है "अल्लाह के सिवाए लोग जिन की इबादत करते हैं उन्होंने कायनात में कोई चीज़ पैदा नहीं की।"

(नहल 16–20 रूम 30–40, लुक़्मान–31–11, फ़ातिर 35–40 और अहक़ाफ़ 46–4)

बल्कि अगर सब झूठे मअबूद जमा हो जाएं और मक्खी पैदा करना चाहें तो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। (पैदा करना तो दूर) अगर मक्खी कोई चीज़ उनसे छीन ले जाए तो उस से छुड़ा भी नहीं सकते। (हज्ज 22–73)

अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारने वालों ने अल्लाह की क़द्र न की जैसा कि उसका हक़ था (हज्ज 22–74)

अब तय हमें करना है कि हमारी इबादात का असली हक़्दार कौन है? वह अल्लाह! जो सारी कायनात का बनाने वाला पालने वाला है या फिर वो लोग जिन्होने कोई चीज़ पैदा नहीं की और न ही किसी चीज़ के मालिक हैं।

बल्कि जिन्हें खुद अल्लाह ने पैदा किया, और जिन्हें मौत भी आ गई।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें अपने दीन की सच्ची समझ अता फ़रमाए और हमें अपने दीन (इस्लाम) के सीधे रास्ते पर चलाए।

इन पर्चो को आप तक पहुंचाने में अपने जिन भाईयों का हमें तआवुन हासिल है। अल्लाह उनकी और हमारी मिली–जुली कोशिशों को शर्फ़ क़ुबूलियत अता करे। और हमारी कोशिशों को हमारी निजात का ज़रिया बना दे। आमीन! वास्सलाम

अहले इल्म हज़रात से गुज़ारिश है कि हमारी ग़लती पर हमारी इस्लाह फ़रमाए।

दिनांक 7/05/2009

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

टोंक